211
770 P
M
Micro film

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi
1267
10/01
आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 770

2011
2011
891.431
J318 Sh

* वन्देमातरम *

* शहीदों की गरजना *

उर्फ

क्रान्ति की लहर

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—
ठा० रवीसिंह आर्ट पुस्तक बेचन वाला
एजेण्ट—अग्रवाल बुकडिपो खारी बावली दिल्ली।

तृतीयबार १०००   मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 770
Date 20/12/71
GOVT. OF INDIA

प्रार्थना

जगदीश यह विनय है जब प्राण तन से निकले।
प्रिय देश देश रटते यह प्राण तन से निकले॥
भारत वसुन्धरा पर, सुख शान्ति आँगना पर।
शस्यश्याम श्यामला पर यह प्राण तन से निकले॥
देशाभिमान धरते, जातीय गान करते।
निज देश व्याधि हरते यह प्राण तन से निकले॥
भारत का चित्र पट हो, युग नेत्र के निकट हो।
श्री जान्हवी का तट हो तब प्राण तन से निकले॥

स्वतंत्र होकर

अधीन होकर बुरा है जीना,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
सरल को तजकर गरल का प्याला,
है मरना अच्छा स्वतन्त्र होकर॥
पड़ी हो हाथों में हथकड़ी गर,
तो स्वर्ग के सुख से लोभ क्या है
नरक के दुःख में निवास निश-दिन,

है करना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
जो दास होकर मिले भवन में,
सुस्वादु भोजन तो तुच्छ है वह ॥
सदैव उपवास करके वन वन,
विचरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥
मिले उपाधी या मान पदवी,
जो सेवा करके तो व्यर्थ हैं सब।
घृणा व अपमान के गढ़े में,
उतरना अच्छा स्वतन्त्र होकर ॥

है !

कब तक पियोगे प्याले, भारत के रहने वाले।
अब आंख खोल देखो, हिन्दुस्तान वाले ॥
ग़ैरौंने तुमको लूटा, सदियों से तुमको मारा।
क्यों बे ख़बर पड़े हो भारत के मौ निहालो ॥
कपड़ा रहा न तन पर, खाने को कुछ नहीं है।
करते गदा गरी हो, शाहों के नाम वाले ॥
सुन्दर भवन कहाँ वे, रत्नों से जो जड़े थे।
उनका पता नहीं है, भारी गुमान वाले ॥

सन्तान जो तुम्हारा, फिरती है मारी मारी।
करता है आहो ज़ारा, भाषम के नाम वाले॥
आपस की फूट भाई, हम पर यह रङ्ग लाई।
तब हो ता मार खाई, ऊँचे निशान वाले॥
धर्मात्मा वही हैं, करते जो देश सेवा।
विनती यही है मेरी- भारी ईमान वाले॥

विजय होगी।

डटो अब सत्य पर भाई विजय होगी विजय होगी।
कटादो अपना सर भाई विजय होगी विजय होगी॥
अगर वह गन मशीनों की धमकियां तुमको देते हैं।
बढ़ादो बढ़के निज छाती विजय होगी विजय होगी॥
अगर वह हथकड़ी बेड़ी दिखायें तो दिखाने दो।
करो कर्तव्य सुखदाई विजय होगी विजय होगी॥
मेरे प्यारे शहीदो अब नहीं है काम देरी का।
दिखादो चाल चौताई विजय होगी विजय होगी॥
अगर इस जङ्ग में चूके समझ लेना बुरा होगा।
न पिछड़ो देखकर खाई विजय होगी विजय होगी॥
इधर हैं शेर गांधी जी उधर हैं शासकों का दल।
बनो मोहन के अनुयायी विजय होगी विजय होगी॥

गजल

टोडी बच्चा हाय हाय टोडी बच्चा हाय हाय ।

टोडी बच्चा वह कहलाता, जिसका खाय उसे गुर्राता ॥

फूले टुकड़े खाय २ टो० ॥

खा २ माल बने अलमस्ता जुदा बनावे अपना रस्ता ॥

मूछों पर बल लाय २ ॥ टो०

बना पिंजर हिन्दकी माटीका, फिर क्या हक उसको डाटीका

डंडे मारे हाय २ टो०

अभी वक्त है समझो भाई, मिलकर जग में करो भलाई ॥

काल दबावे आय ॥ टो०

मलहार निहालदे

अरी बीबी छोड़ो न महलों का वास,

मरदों को देदो चूड़ियाँ ॥

घूंघट तो काढ़ें बहना बालमा,

अरी बीबी तुम चलो सरे बाजार ॥ मरदो०

रोटी बनावें री बहना बालमा ।

अरी बीबी हम तुम नमक बनाय ॥ मरदो०

वस्त्र विदेशी ये बहना जल डटो ।

अरी बहना कौड़ी का बिकने दो हाय ॥ मरदों

अपनी तो देदो री शराब पे ॥

अरी बहना कौड़ी की बिकने ना पाय ॥ मरदों

एक डर मानो करतार का ॥

अरी बीबी दूजे से डरिये नाय ॥ मरदों०

लाठी औ गोली से बहना मत डरो ।

अरी बीबी भूलो जा जेल मझार ॥ मरदों०

मलहार

अरी बीबी लूटा है भारत देश, फिरंगिया डाकू आन के ॥

पहिले तो लूटी कारी गरी ।

अरी बीबी लूटा है सकल व्यापार ॥ फि०

मर्द निहत्थे बहना कर दिये ॥

अरी बीबी छीने हैं सब हथियार ॥ फि० ॥

१४४ धारा फुलझड़ी ॥

अरी बीबी जी चाहे जहाँ दी चलाय ॥ फि०

सोना तो लन्दन डाकू लेगये ॥

अरी बीबी कागज दिये हमारे हाथ ॥ फि०

पवन और पानी देते मोलको ॥

अरी बीबी साँभर पे लगाया महसूल ॥ फि०

मक्खन तो मक्खन बीबी खागये ॥

अरी बीबी छाछ विकाय दई मोल, फि०

सबही बिदेशी चीज़े होगईं,

अरी बीबी देश तो धरो है मिटाय, फि०

मनतरंग

मिटेंगे देश पर अपने यही दिल में समाई है ॥
करें आज़ाद भारत को यही एक धुन समाई है ॥
नहीं है ज्ञान क्या उनको कि भारत वीर भूमि है।
करे बरबाद हम उनको कि जिनमें दुश्मनाई है ॥
कटायेंगे गला बेशक मगर यह ध्यान में रखना ॥
मिटेंगे हम मिटाकरके शपथ हमने यह खाई है ॥
है क्या शै जेल और फांसी डराते हो हमें जिनसे ॥
करें आदर्श पर तिल तिल न वह भी दुःखदाई है ॥
करो जुल्मो सितम बेशक मगर यह भूल मतजाना ॥
नहीं अपमान सह सकते जो भारत के शैदाई हैं ॥

गजल

नही पानी नहीं पीनी शराब जालिम नही पीनी ।
वेद कुरान इजील पुकारे. हैं यह बड़ी खराब, जा०
कोई धर्म इसे भला कहता, बुरा कहें अहबाब । जालिम०
पी बेहोश पड़े नाली में, कुत्ते करें पेशाब. जालिम०
रण्डी के घर जाय शराबी, औंधा पड़े शिताब, जालिम०
कुत्ते मूह चाटें गालों पे, मक्खी का बजे रबाब, जालिम०
जब कूड़ी पे गिरे शराबी. मुक्का मिले खिजाब, जा०
कोई भूल इसे मत पीना, चाहें मुफ्ती मिले जनाब, जा०

झंडा गायन

ऊँचा हुआ तिरंगा हिन्दोस्तां का झंडा ।
ऊँचा रहे हमेशा हिन्दोस्ताँ का झंडा ॥
सुन्दर है फूल जैसा तोभी तो दुशमनों के,
आखों में है खटकता हिंदोस्थां का झंडा ॥
सर को उठा के देखो फर फर हवा में देखो ।
फहरा रहा है कैसा हिंदुस्थां का झंडा ॥
खुशियां मचीं हैं घर २ दीपावली है घर घर ॥
उड़ता नज़र जो आया हिन्दोस्तां का झंडा ॥
आज़ादीये वतन के सब मिलके गीत गाये ।
ऊँचा रहे खुशाया हिन्दोस्तां का झंडा ॥
कहते हैं सच यह दिलसे इसमें नहीं बनावट ।
हमको है जां से ज्यादा हिंदोस्तां का झंडा ॥
अब फूट और गुलामी कूप में जा गिरेगी ।
महताब बनके चमका हिंदोस्ताँ का झंडा ॥
रंग आगया किसी पर रंग उड़गया किसी का ॥
उड़ता हुवा जो देखा हिंदोस्ताँ का झंडा ।
हक से न लेंगे ज्यादा घबराय न कोई भी ॥
दुशमन नहीं किसीका हिंदोस्तां का झंडा ।
पहले सफेदी सबको है सुलहओ दरगुजर की ॥
पीछे है खून जैसा हिंदोस्तां का झंडा ॥
हिंदोस्तां के वीरो भारत के नौ जवानो ।
होने न पाये नीचा हिंदोस्तां का झंडा ॥
सबमिल के इसके नीचे आओ क़सम यह खाये ।
जाँ से रखेंगे प्यारा हिंदोस्तां का झंडा ॥

स्वाधीन प्रेस दिल्ली